RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

द्रविड़ भारत

गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

जनवरी-2025 | वर्ष - 16 | अंक : 12 | मूल्य : 5/-

संत कबीर दास | संत रविदास जी | घासीदास | बिरसामुण्डा | पेरियार रामास्वामी | छत्रपति शाहूजी महाराज | सन्त गाडगे | महात्मा ज्योतिबा राव फुले | नारायण गुरु | सावित्री बाई फुले | कांशीराम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),
मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

ताकत से खुलता है आजादी का रास्ता

अपने मकसद को लेकर कांशीराम कभी मुगालते में नहीं रहे और इस तरह सियासी इतिहास बदल डाला

अनिल चमड़िया

कांशीराम पंजाब के जिस होशियारपुर इलाके के थे, वह अंग्रेजी शासन के दौरान भारत में दलितों के पहले आंदोलन का एक बड़ा केन्द्र था। 1920-30 में मांगूराम की अगुआई में सिख धर्म और हिन्दुत्व के बीच से आदि धर्म और रविदास सभाओं की बड़े पैमाने पर स्थापना की गई। गौरतलब है कि कांशीराम भी सिख धर्म पर ब्राह्मणवादी संस्कृति के बढ़ते दबदबे से खिन्न होकर बौद्ध बने थे। जाहिर है उनकी चेतना मे अतीत के आंदोलनों और दलितों की राजनैतिक बगावत की गूंजे मौजूद थीं। आज जब हम भारतीय राजनीति में कांशीराम के योगदान को याद करते हैं, तो इसे एक लंबी परंपरा में आए बड़े मोड़ की तरह देख सकते हैं।

हजारों साल पुराने इस जातिवादी सिस्टम मे एक दलित अपनी मुक्ति की हर राह टटोलता है। गली-कूचा जहाँ भी उसे रोशनी दिखती है वहां से वह गुजरना चाहता है। कांशीराम ने अपने सामाजिक और सियासी जीवन में इसी बात को स्थापित करने की जरूरत महसूस की। वे मुक्ति की छटपटाहट के नुमाइंदे के रूप में संसदीय राजनीति में सक्रिय दलित नेताओं को देखना चाहते थे, लेकिन हकीकत उनके अंदर बेचैनी पैदा करती थी। हालांकि उन्होंने ऐसे दलित नेताओं के खिलाफ 'चमचा युग' नामक एक किताब भी लिखी, लेकिन वे खुद को एक बौद्धिक सीमित नहीं रखना चाहते थे। पंजाब के बाद महाराष्ट्र तक सरकारी नौकरी के सफर में उन्होंने यह महसूस करना शुरू कर दिया कि आम्बेडकर के बाद के भारत में दलित राजनीति की कमान संभालने की तैयारी में जुटना ही होगा। कांशीराम की चेतना की गहराई का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस समय डॉ. आम्बेडकर की योजना के मुताबिक दलितों का संगठन बनने की तैयारी में निकली रिपब्लिकन पार्टी बुरी तरह बिखर रही हो, सत्ता में फौरन पद हासिल करना दलित राजनीति की संस्कृति बन गई हो, दलितों की हालत सुधारने की बजाय वोटों पर किसी तरह कब्जे की प्रवृत्ति विकसित हो रही हो, वैसे समय में उन्होंने संसदीय राजनीति की सामाजिक धारा को बदल लेने का संकल्प लिया। यह इसके बावजूद कि संसदीय राजनीति की विरासत के नाम पर उनके पास आम्बेडकर के अलावा कोई आदर्श शख्सियत या विचारधारा नहीं थी। कई बार वे आम्बेडकर को भी ना काफी मानते थे। उन्होंने आम्बेडकर के महार नेता के रूप में सिमटते जाने की बात कही थी। लेकिन उन्होंने बाबासाहेब के राजनीति औजारों का भरपूर इस्तेमाल किया। उन्होंने विशाल हाथी और नीले रंग के झंडे ने एक ऐतिहासिक विरासत में उन्हें जोड़ा।

कांशीराम के राजनैतिक जीवन का एक पहलू यह है कि वे सामाजिक न्याय के शुरूआती केन्द्र दक्षिण के प्रदेशों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज नहीं करा सके। दलित आंदोलन के बड़े केन्द्र महाराष्ट्र में भी उन्हें कोई खास कामयाबी नहीं मिली। कई सुधार आंदोलनों के केन्द्र अपने गृह राज्य पंजाब में भी उन्हें अपना राजनीतिक विस्तार होता नहीं दिखा। उन्हें कामयाबी मिली तो संसदीय राजनीति की दिशा तय करने वाले और और हिन्दुत्ववाद के सबसे बड़े गंढ़ यूपी में। मानों यूपी और पूरी हिंदी पट्टी आम्बेडकर की यात्रा को कांशीराम के जरिए पूरी होते देखने का इंतजार कर रही थी। वहां खास सामाजिक आधारों पर खड़ी कांग्रेस की सत्ता कांशीराम के आने से पहले तक ही दिखाई दी। कांशीराम ने स्थायित्व की राजनीति को अभिजात्य संस्कृति का हिस्सा करार दिया। दरअसल उनके राजनैतिक उभार के बाद ही देश में गठबंधन की राजनीति का नया दौर शुरू होता है। संसदीय पार्टियों के सामाजिक आधारों का हिलना इसकी अहम वजह थी।

सदियों के दमन, उत्पीड़न से दलित समाज के अंदर बैठी मानसिक गुलामी को झकझोरना कांशीराम ने जरूरी समझा। इसके लिए उन्होंने एक नई स्टाइल ईजाद की। सामाजिक वर्चस्व वाली जातियों के खिलाफ नफरत को उन्होंने जोश में बदल दिया। दूसरी तरफ उन्हें कम्युनिस्ट असर से भी अपने संभावित आधार को निकालना था। कम्प्यूनिस्ट अपनी जोशीली शैली के लिए मशहूर है। हिन्दी पट्टी में दलितों पर कम्युनिस्ट आंदोलनों का असर रहा है। यूपी में आज ऐसे कई इलाकों पर बीएसपी की पकड़ है, जो कभी कम्प्युनिस्टों के जुझांरू आंदोलनों का केन्द्र रहे थे। कांशीराम ने इस जमीन को हासिल करने में भी कामयाबी पाई, लेकिन अपने जोशीले भाषणों और तर्कों के बावजूद यही चमत्कार वे उन इलाकों में नहीं दोहरा पाए, जहां नक्सलवाद प्रभावी है। बहरहाल कांशीराम महसूस करते थे कि दलितों को झकझोरने और उनमें अपनी ताकत को पहचानने की चेतना विकसित करनी होगी। सामाजिक आधार विकसित करना और सत्ता शीर्ष में दलित राजनीति को स्थापित करना उनका मुख्य मकसद था। इसके लिए उन्होंने तमाम धाराओं को अपना राजनैतिक दुश्मन करार दिया। ऐसे संदेश का उन्हें फायदा मिला और 2003 में सेहत बिगड़ने से पहले तक पूरे देश में सात से आठ पर्सेंट और अकेले यूपी में 25 पर्सेंट वोटों पर उनका कब्जा हो गया। दरअसल उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधियों का वरीयता क्रम तय कर रखा था, जिसके आधार पर वे अलायंस बनाते थे। उन्हें जब मध्यवर्गीय जातियों पर आधारित राजनीति सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण लगी, तो उन्होंने हिन्दुत्ववादी ताकतों से गठजोड़ कर लिया। चूंकि स्थायित्व उनकी राजनीति का कोई मकसद नहीं था और सभी को वे विरोधी मानते थे, इसलिए सरकार और अलायंस बनें या टूटें इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था।

उनका सिर्फ यही मकसद रहा कि अपने नेतृत्व में सत्ता को स्थापित कर अपने सामाजिक आधार से सीधे संवाद किया जाए। यकीनन उन्होंने दूसरों की तरह राजनीतिक तिकड़मों का सहारा लिया, लेकिन दलित वर्ग अपने नैतिक मानदडो के तहत इन्हें अलग तरीके से देखता है। दूसरे दलित नेताओं से उलट कांशीराम की महत्वकांक्षा कभी कोई पद पाने की नहीं रही। उनके सामने देश का प्रेजिडेंट बनने का प्रपोजल आया, लेकिन उन्होंने सक्रिय राजनीति को अपने लोगों के लिए जरूरी समझा। यह पहलू उन्हें उत्तर भारत में तमाम दलित नेताओं से बिल्कुल अलग करता है। सचमुच उत्तर भारत की कांशीराम के रूप में जो दलित नेता मिला, वह एक धारा के रूप में लंबे समय तक अपनी मौजूदगी बनाए रखेगा। कांशीराम अब किसी एक पार्टी के नेता नहीं रहे। वे एक विचारधारा के रूप में जाने जाएंगे।

काशीराम की चेतना में अतीत की बगावतें मौजूद थीं। उन्होंने दलित की सत्ता के लिए सियासत में हलचल मचा दी।
इसीलिए अब हर पार्टी के अजेंडे में एक विचार उनकी जगह है।

साभार :
बहुजन नायक नवभारत टाइम्स 10.10.06
मान्यवर कांशीराम स्मृति ग्रंथ
पेज संख्या 88 से 89
एस. एस. गौतम

अच्छे स्वास्थ्य के लिए फल एवं सब्जियाँ अति आवश्यक

आजकल देखा जा रहा है कि फास्टफूड का चलन दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। घर पर बनाने की प्रथा की अपेक्षा बाहर के बनाये हुए खाद्य पदार्थों को पसंद किया जा रहा है। जिसमें फास्टफूड जो अधिकांशतः फलों एवं सब्जियों की प्रचुर मात्रा नहीं रखते इनकों जनसमुदाय के द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। इसमें अधिकतर सम्पन्न वर्ग के लोग ज्यादा शामिल होते हैं। भारत की जलवायु में वनस्पतियों को ज्यादा महत्व दिया गया है। जिनसे जीवन अधिक सुरक्षित और स्वस्थ रहता है। लहसुन को तामसी भोजन में स्थान दिया गया है। इसका एकमात्र कारण यह है कि उसके खाने से उत्तेजना उत्पन्न होती है। परन्तु इसके अभाव में भोजन स्वादरहित हो जाता है। इसके साथ वह अनेक रोगों में रामबाण औषधि का कार्य करता है। जैसे–100 ग्राम सरसों के तेल में लहसुन की छोटी गांठ की सभी कलियां छीलकर डाल दें और बाद में उनको मंदी आंच पर पकाएं। कलियां जब काली पड़ जायें तो तेल छानकर शीशी में भरकर रख दें। रोज शाम को केश धोकर इसी तेल की 10–15 मिनट तक मालिश करें और केशों को लपेटकर सो जाएं। 15–20 दिनों में केश झड़ने बंद हो जाएंगे।

लहसुन और नींबू का रस बराबर मिलाकर सिर के बालों की जड़ों में लगा दें तथा सूखने दें। दो घंटे में सभी जुएं मर जाएंगी। लहसुन गठिया की पीड़ा का शत्रु है। 15–16 लहसुन की कलियां ढाई सौ ग्राम गाय के दूध में उबालकर पियें तो शीघ्र लाभ होगा। साथ ही पीड़ा वाले अंग पर लहसुन के तेल की मालिश भी करें। लहसुन का तेल सदैव तिल से तेल में बनाएं। गठिया की पीड़ा के अतिरिक्त आमवात, पक्षाघात, कम्पनघात आदि रोगों में भी लाभ होता है। अफारा, अजीर्ण व अरुचि होने पर 4–6 लहसुन की कलियां चबा–चबाकर खाएं। शीघ्र लाभ होगा। एक चम्मच लहसुन का रस उल्टी होने की स्थिति में पिलाने से थोड़ी देर में ही उल्टी बंद हो जाती है। कब्ज होने पर प्रातः लहसुन की चाय बिना चीनी डाले पिएं। एक कप चाय के लिए थोड़े गर्म पानी में जरा सा गुड़ डालें। इसके सेवन से खट्टी डकारें व गैस बननी बंद हो जाती है। शरीर के किसी भाग में दाद हो जाने की स्थिति में लहसुन को महीन पीसकर उसमें चार गुना वैसलीन मिला लें और इसी मलहम को दो–तीन बार चोट लगने पर अथवा मोच आने पर लहसुन व हल्दी की पोटली बांधने से तुरन्त लाभ मिलता है। क्षयरोग होने पर यदि प्रतिदिन 5–6 लहसुन की कलियां चबाएं तो क्षयरोग के कीटाणु जड़ से समाप्त हो जाते हैं। इसमें सल्फ्यूरिक एसिड भरपूर मात्रा में होता है, जो क्षयरोग के कीटाणु को जड़ से नष्ट करता है। कोलेस्ट्रॉल हृदय का सबसे प्रबल शत्रु है। यह रक्त की नलिकाओं में रक्त का बहाव कम कर देता है। अधिक कोलेस्ट्रॉल के जमाव के कारण दौरा पड़ता है। लहसुन में गंधक का प्रचुर यौगिक होता है। जमे कोलेस्ट्रॉल को बाहर निकाल देता है, अतः प्रातरूकाल लहसुन की पांच कलियां चबाकर खानी चाहिएं। इससे कोलेस्ट्रॉल शीघ्र बाहर निकल जायेगा। मोटापा कम करने के लिए प्रातः तथा सायंकाल कच्चे लहसुन की कलियां चबाकर गुनगुने पानी के साथ खाएं। मधुमेह के रोगियों को प्रतिदिन लहसुन की कलियां खानी चाहिए। इससे मूत्र में शक्कर आनी काफी हद तक कम हो जाती है। मिर्गी का दौरा पड़ने वाले व्यक्ति के मुख में लहसुन के रस की कुछ बूंदे टपका देने से उसको तत्काल होश आ जाता है। प्रसूति के पश्चात यदि किसी को ज्वर आ रहा हो या पीड़ा हो रही हो तो उसे प्रातः अथवा सायंका कच्चे लहसुन की दो–दो कलियां लेने से लाभ प्राप्त होगा।

कुव्यवस्था की शिकार चमार जाति

मनुस्मृति के रचयिता मनु ने मानव जाति के एक बड़े भाग को त्रस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और इसी मनुस्मृति के कारण आज भी सारे देश में इस कदर परस्पर विद्वेष विद्यमान है कि करोड़ो लोग बराबरी का अहसास करने पर ही प्रताड़ित किए जाते हैं। ऐसे दौर में जहाँ पृथ्वी की तरह दूसरे ग्रह पर नई दुनिया बसाने की मुहिम जोरों पर है और इधर हिन्दू समाज में अपने ही जैसे हाड़–मांस के पुतले को ऊँची शिक्षा और प्रतिष्ठा से युक्त होने के बावजूद बराबर का स्तर देने को तैयार नहीं है। यह मनु द्वारा बनाए गए विधान का असर है, जो हजारों वर्ष बीत जाने पर भी बरकरार है। शायद दुनिया में इसके अलावा कोई भी दूसरी पुस्तक नहीं होगी, जिसके दुष्प्रभाव का दंश इतना घातक हो। यह इस बात का भी प्रमाण है कि तोप–तलवार के बजाय कलम अधिक कारगर है। मनुस्मृति ने जो घाव दिये हैं, उनकी पीड़ा रह–रहकर तन–मन को झकझोर रही है और यह घाव कब तक ठीक होगा, उसकी समय सीमा निर्धारित करना फिलहाल संभव नहीं लगता।

मनु ने स्मृति लिखकर समाज को विभिन्न वर्णों एवं जातियों में बांट दिया। जातियों में एक–दूसरे के प्रति, ईर्ष्या, द्वेष भरकर छोटे–बड़े का बीज ही नहीं बोया, अपितु दलित जातियों को घोर–व्यवस्था में फांस दिया। हालांकि छूआछुत लगने वाली बीमारी घाव, कोढ़पन या शारीरिक विकलांगता जैसी कोई बात नहीं है, परन्तु उच्च कही जाने वाली जातियों के मन में दलित जातियों के प्रति घृणा भर दी और उन्हें गुलाम से बदतर स्थिति में धकेल दिया। उसी मनु की मूर्ति राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर के प्रांगण में स्थापित कर दी।

यही वर्तमान संविधान के समता, एकता और भाईचारा के सिद्धान्त को नकार कर पुरानी व्यवस्था को बनाए रखने का खुला आह्वान है, जो अछूत बना दी गई जातियों से बेगार लेने, बाल मजदूरी, बंधुआ मजदूरी, दलित महिलाओं के साथ बलात् दुष्कर्म करने जैसी अपराधों की खुली छूट देता है। नित्य–प्रति वकील, जज व अन्य वे व्यक्ति, जो अधिकार सम्पन्न समझे जाते हैं और न्याय प्रक्रिया से जुड़े हैं, उन्हें ही मनु के विधान में खुली छूट का अधिकार मिला हुआ है, इसलिए वे भारतीय संविधान की अनदेखी कर रहे हैं।

यह एक विडम्बना है कि ब्राह्मण और क्षत्रिय के अलावा यहाँ अन्य किसी जाति का व्यक्ति चाहे जितना सदाचारी, धनी या विद्वान हो, किन्तु सामाजिक दृष्टि से उसे नीचा ही समझा जाता है।

मनु द्वारा बनाई गई वर्ण–व्यवस्था ने कभी समाज को जुड़ने ही नहीं दिया, बल्कि आपस में बैर–भाव, ईर्ष्या, घृणा और वैमनस्य ही फैलाया। विकास के रास्ते में इससे बाधा ही पैदा हुई एवं इसी कारण देश एक सम्पन्न, समृद्ध और अखंड राष्ट्र नहीं बन पाया। इस व्यवस्था ने दलितों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार हीं नहीं किया, अपितु उन्हें अयोग्य घोषित करने का एक भद्दा मजाक भी किया। राष्ट्र हित में भी यह कभी लाभदायक हो ही नहीं सकती। हिन्दू धर्म में वर्ण–व्यवस्था श्रम विभाजन ही नहीं, अपितु प्रतिष्ठा का विषय बन गया है, जिसे धार्मिक मान्यता भी मिली हुई है। शास्त्र सम्मत होने से इसने चिरस्थायी स्वरूप धारण कर लिया। शास्त्र में लिखा है–ऐसा सुनते ही तेवर एकदम ठंडे हो जाते हैं।

चमार सबसे अधिक प्रभावित रहा है। मा. कांशीराम जी कहते हैं कि चमार अपने आपको छुपाकर कभी जाटव बनता है, कभी मेघवाल, बैरवा, बलई और आदि धर्मी बनता है। चूंकि ब्राह्मण द्वारा दिये इस नाम को कलंक समझता है और इससे दूर भागना चाहता है, परन्तु इसे दूर करने में वह असफल रहा, अतः क्यों नहीं इसे मजबूत किया जाए।

वर्ण–व्यवस्था को हथियार बनाकर हिन्दू धर्म में करोड़ों लोगों को हजारों वर्षों से नारकीय जीवन जीने को विवश किया गया है, स्वामी विवेकानन्द उसकी तीव्र भर्त्सना करते हुए कहते हैं– ''पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो हिन्दू धर्म की तरह मानव की आत्मा की महिमा का गुणगान करने में इतना उदात्त हो और पृथ्वी पर ऐसा भी कोई धर्म नहीं जो हिन्दू धर्म के समान गरीबों व पिछड़ी जातियों का गला इतनी क्रूरता से घोंटता हो।''

हिन्दी साहित्य के उद्भट विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे पाप की संज्ञा देते हैं और प्रायश्चित की आवश्यकता महसूस करते हैं और ऐसा न करने पर उत्पन्न होने वाली भयावह स्थिति के प्रति सचेत करते हुए लिखते हैं– ''क्या भारतवर्ष का यह समुदाय, जिसे आज थोड़ा बहुत बोलना आता है, इस देश की मूक और दलित जनता की जागृति को सहन करने लायक मानसिक बल और बौद्धिक साहस रखता है? युग–युगान्तर से संचित पाप का प्रायश्चित करने लायक अनुताप हमारे चित में अब भी नहीं आ सका है। हम आज भी काल्पनिक भारत का जय निनाद करते जा रहे हैं। भारत माता वस्तुतः क्या हैं, यह समझने की चेष्टा बहुत कम हो रही है। पूर्व और पश्चिम में जिस प्रकार की जागृति हो रही है, उसे देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भारत माता जिस–दिन अपने कोटि–कोटि दलित, दीन, निरीह, निर्वस्त्र बालकों को लेकर जाग पड़ेगी, उस दिन की हालत कल्पना से बाहर होगी। उस दिन के लिए हमें अभी से तैयार रहना चाहिए।

भारतवर्ष क्या है? हमें इस बात को अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि भारतवर्ष उन करोड़ों दलित और मूक जनता से अभिन्न है,जिन्हें छूने से भी पाप अनुभव किया जाता है। इनकी संख्या कम नहीं है। समूचे भारतीय जनसमूह के इतने स्तर तक भेद है कि उनका हिसाब–रखना बड़े–से–बड़े धैर्यशाली के लिए भी कठिन कार्य है। एक विदेशी नेतृत्व वेत्ता ने हैरान होकर कहा कि भारतवर्ष में एक भी जाति ऐसी नहीं मिली, जो किसी न किसी दूसरी जाति की अपेक्षा अपने को बड़ी न मानती हो। फलतः यह समझना बड़ा कठिन है कि सबसे नीची समझी जाने वाली जाति कौन है। जन–जागृति यदि सचमुच हुई, तो उसका सीधा अर्थ होगा, इस स्तर–भेद पर सीधी चोट। मनुष्य जब मनुष्य समझा जाएगा, उस दिन युग–युग में संचित संस्कारों को बड़ी ठेस लगेगी, भयंकर प्रतिक्रिया होगी और यदि उस महा आघात को सहने योग्य तप और स्वाध्याय हमने अभी तक संचय कर लिया, तो इस गरीब देश का क्या होगा, कहा नहीं जा सकता।''

वे आगे लिखते हैं– ''इस देश में बहुत से साधुमान व्यक्ति हैं, जो समझते हैं कि वेद पढ़ा देने या जनेऊ पहना देने से इन जातियों का 'उद्धार' हो जाएगा। बहुत से लोग इनका हुआ अन्न ग्रहण कर लेने के कारण अपने को बड़ा सुधारक समझते हैं, यह मनोवृत्ति उचित नहीं। जन–जागृति दिस दिन सचमुच होगी, उस दिन ऊँची मर्यादा वाले इनका 'उद्धार' नहीं करेंगे, वे स्वयं अपनी मर्यादा उच्च बनाएंगे। वह एक अपूर्व समय होगा, जब शताब्दियों में पददलित, निर्वाक, निरन्न जनता समुद्र की लहरियों के फुत्कार के समान गर्जन से अपना अधिकार मांगेगी। उस दिन हमारी सभी कल्पनाएँ न जाने क्या रूप धारण करेंगी, जिन्हें हम 'भारतीय सभ्यता', हिन्दू संस्कृति' आदि अस्पष्ट भुलाने वाले शब्दों में प्रकट किया करते हैं। मैं हैरानी के साथ सोचता हूँ कि क्या हम में उस महान ऐतिहासिक घटना को सहने का साहस है? निस्संदेह यह जागृति और समाज–सुधार का सहारा नहीं लेगी। यह आर्थिक और राजनैतिक शक्तियों पर कब्जा करेगी।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की नेक सलाह पर विचार करना सवर्णों का काम है। हमारा काम तो यह होना चाहिए कि कम से कम वर्ण–व्यवस्था की बीमारी को अनुसूचित वर्गों से निकालने का काम करें और इसमें डॉ. अम्बेडकर द्वारा सुझाई गई उपचार–पद्धति का प्रयोग करें और तथागत बुद्ध के क्रांतिकारी उद्बोधन 'अपना दीपक आप बनो' से प्रेरणा ग्रहण करते हुए इस स्तर भेद को तोड़कर आगे बढ़ें।

साभार :
चमार जाति इतिहास और संस्कृति
पेज संख्या 86 से 88 तक
एस.एस. गौतम, आर.एम.एस. विजयी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

फैट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक, धमनियों को करता अवरूद्ध

बच्चों को जरूरत से ज्यादा न खिलाएं फैट वाली चीजें, एक्सरसाइज का रखें ध्यान

मोटापे का कारण जान लिया जाए तो इसे दूर करने में कोई समस्या नहीं। स्लिम–ट्रिम रहकर न सिर्फ आप दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं बल्कि स्वयं में भी एक नया उत्साह आ जाता है। मोटापा एक ऐसी समस्या है, जिसमें शरीर में फैट (वसा) की मात्रा सामान्य से अधिक होने के कारण शरीर का वजन लम्बाई की अपेक्षा अधिक होता है। जैनेटिक फैक्चर यानी पैदाइशी मोटापा या मोटापे की जीन्स होना, जो प्रायः मिडिल एवं में जाकर सामने आती हैं। उच्च कैलोरी डाइट ऐसा खानपान, जिसमें कैरोली या फैट की मात्रा अधिक हो। ऐसा खाना खाने से कई वर्षों में मोटापा आ जाता है। करीब 13 वर्ष की उम्र से ही शरीर की धमनियों व हृदय में फैट जमा होना शुरू हो जाता है, अतः बच्चों को भी फैट वाली चीजें नहीं देनी चाहिए। एक्सरसाइज की कमी औरतें यदि दिन भर भी अपनी रसोई में काम करें या घर में काम करें तो भी इनकी कैलोरी कम खर्च होती है, क्योंकि आजकल उनकी मदद करने वाली बहुत सी मशीनें आ गई हैं।

उपचार की बाते करें तो यदि मोटी औरतें वजन घटाना चाहती हैं, दुबली होना चाहती है तो वह अवश्य आजमाएं। हर तरह के मोटापे को कम किया जा सकता है व ठीक किया जा सकता है। फैट कहीं भी हों–हाथ में, पैर में, पेट पर, कूल्हे पर, गर्दन पर, कमर में, सीने में, जाँघों में, पीठ में यह घटाया जा सकता है। फैट कम करने के लिए एक ही नहीं, हर तरीका अपनाना चाहिए। पहले तो अपने को अच्छी तरह शीशे में देखें कि कहां फैट ज्यादा है। आबेसिटी को नापने की आवश्कता नहीं होती। कहा जाता है कि मोटा व्यक्ति वही है, जो खुद अपने आपको मोटा समझे।

भोजन – मात्रा कम करें। बार–बार न खाएं। ज्यादातर उबली चीजें या सलाद, सब्जी खाएं। जहाँ तक सम्भव हो सूप, दाल, सब्जी का पानी, मट्ठा, सलाद से पेट भरें। फल खाएं, लेकिन रस वाले। फल कम खाएं, जैसे–आम,पपीता, केला आदि। हल्के वजन की चीजों में क्रम कैलोरी होती है, जैसे–पापकॉर्न, भुना चना, आलू, चावल, चीनी कम खाएं, नमकीन स्नैक्स जैसे चिप्स, दालमोठ, तली चीजें न खाएं, बेक्ड व रोस्टेड स्नैक्स खाएं। कन्फेक्शनरी जैसे–केक, पेस्ट्रीज, टॉफी, कैरोमेल्स न खाएं, मिठाइयां न खाएं। छिलके वाली चीजें खाएं जैसे साबुत दालें, चना, चोकर युक्त आटा। रात को बहुत हल्का खाना खाएं। दही, सलाद, सूप आदि खाने के साथ होने चाहिए। इनसे वजन कम होता है।

सुबह नाश्ते में सत्तू या फल–सब्जी, ब्रेड खाना चाहिए। घी–मक्खन न खाएं। सारा खाना रिफाइन्ड, तेल में पका होना चाहिए। खाने में ऊपर से घी, तेल, नमक, शक्कर नहीं डालना चाहिए। स्वाद बढ़ाने व भूख बढ़ाने की चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे–चूरन, अचार, चटनी, मुरब्बा, सॉस, केचप, डिप आदि।

व्यायाम – व्यायाम से वजन घटता है। नित्य व्यायाम या ऐरोबिक्स या डांस करना चाहिए। वजन कम करने के लिए तैरना भी बहुत अच्छा व्यायाम है। यौगिक क्रियाएं भी बहुत अच्छी हैं। बचपन में तो खूब स्किपिंग (रस्सी कूदना) की होगी। फिर से इसकी शुरूआत कीजिये। इससे हर कहीं से फैट घटेगा। जिम ज्वाइन करने से भी बहुत लाभ होता है। जो लोग किसी बीमारी या आर्थराइटिस के कारण एक्सरसाइज नहीं कर पाते, वे नान एक्सरसाइज तरीके से भी वजन घटा सकते हैं। आजकल हर शहर में ऐसे फिटनेस सेन्टर खुल गये हैं, जो विभिन्न तरीकों से वजन घटाते हैं। जिन्हे हृदय रोग, स्लिक डिस्क या स्पान्डलाइटिस जैसी कोई समस्या हो तो उन्हें एक्सरसाइज करने से पहले डॉक्टर की सलाह ले लेनी चाहिए। गेम्स जैसे बैडमिंटन, लॉन टेनिस, क्रिकेट से भी वजन घटता है।

दिनचर्या – सुबह जल्दी उठना चाहिए व उठते समय ही लेटे–लेटे हवा में साइक्लिंग करनी चाहिए। स्नान करने से पहले कम से कम पचास बार पेट को अंदर–बाहर करना चाहिए। हर काम फुर्ती से करना चाहिए। सवेरे टहलने जाना चाहिए। जिनके बच्चे रोज तेज रफ्तार से चलना चाहिए। धीमी रफ्तार से चलना बेकार है। हर काम कोशिश करके खड़े–खड़े या चलते–फिरते करना चाहिए, न कि बैठकर। अधिक सोने से भी वजन बढ़ता है।

डायबिटीज – मोटे लोगों में इन्सुलिन की कमी से डायबिटीज हो जाती है, क्योंकि जो पैन्क्रियास नामक ग्रन्थि से इन्सुलिन पैदा होती है, वह एक सामान्य शरीर के लिए पर्याप्त होता है, पर मोटे शरीर की वजह से इन्सुलिन की कमी हो जाती है व डायबिटीज हो जाता है। ऐसे में वजन कम कर लेने से, व्यायाम करने से डायबिटीज बगैर दवा के ठीक की जा सकती है।

कई बार डायबिटीज के कारण शरीर मोटा होता चला जाता है। ऐसे में मोटापे का कारण पता लगा कर ब्लड शुगर नियंत्रण में रखने से मोटापा दूर किया जा सकता है। जब भी वजन तेजी से बढ़ रहा हो तो ब्लड शुगर टैस्ट करवाना चाहिए।

थॉयराइड – यदि थॉयराइड ग्रन्थि की खराबी हो तो शरीर में थायराइड हार्मोन्स की कमी हो जाती है। इसे हाइपोथायराइड या मिक्सीडीमा कहते हैं। शरीर यदि अत्यधिक भारी हो तो जो थायराइड हार्मोन्स शरीर में हैं, वे पूरे शरीर के मेटाबोलिज्म के लिए पर्याप्त नहीं होते। ऐसे में वजन कम करने से थायराइड की कमी खत्म हो जाती है। थायराइड की कमी के लक्षण हैं–थकान, वजन बढ़ना, सस्ती त्वचा खराब होना, त्वचा सूखी व कड़ी होना, मन न लगना आदि। यदि सुस्ती त्वचा खराब होना, त्वचा सूर वजन बढ़ता जा रहा हो तो थायराइड हार्मोन्स की जांच करानी चाहिए।

ब्लड प्रेशर – मोटे लोगों का ब्लड प्रेशर हाई होता है। मोटापे के साथ अक्सर शरीर की धमनियां भी चिकनाई (कोलेस्ट्रॉल) जम जाने से मोटी हो जाती है जिसके कारण रक्तचाप बढ़ जाता है। वजन घटाने से ब्लड प्रेशर बगैर दवा ही ठीक हो जाता है या दवा की मात्रा कम हो जाती है।

जोड़ों का दर्द – यह एक तय बात है कि मोटे लोगों में ही अक्सर कमर का दर्द, घुटने का दर्द, कूल्हों व गर्दन में अकड़न, रीढ़ में दर्द होता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार भी जोड़ों की बीमारी या गठिया बाय अधिक वजन होने से कम उम्र में ही हो जाती है, जबकि आमतौर पर ये बीमारियां वृद्धावस्था की हैं। मोटे लोगों में जोड़ों की अन्य बीमारियां भी जैस – रूमेटाइड आर्थराइटिस, स्पान्डलाइटिस अत्यन्त गंभीर रूप ले लेती है।

हृदय रोग – मोटे लोगों में कोरोनरी डिसीज हृदय रोग अधिक पाया जाता है, जो कम उम्र में भी हो सकता है, क्योंकि उनमें ब्लड प्रेशर हाई होता है।

साथ ही उनके शरीर में वसा व कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक होती है। अतः उनकी धमनियां बाहर से मोटी होती जाती है व अन्दर से संकरी। क्योंकि उनकी लाइनिंग में चिकनाई (फैट) जमती चली जाती है। जो हृदय में रक्त के प्रवाह को धीमी कर देती है। अतः उन्हें कोरोनरी आर्टरी हार्ट डिसीज (हृदय) हो जाता है जिसकी वजह से उनमें हार्ट अटैक या मायोकार्डियल इनफार्मेशन की शंका अधिक होती है।

मोटापे की वजह से होने वाली परेशानी – मोटापे की वजह से महिलाओं में मानसिक तनाव हो सकता है तथा वे सीजोफ्रेनिया की भी शिकार हो सकती है। खाना बनाना, झाड़ू–पोंछा आदि में भी खासी दिक्कत होती है। काम करते समय सांस भी फूलने लगती है। ये झुक नहीं पाती। कोई चीज जमीन में गिर जाए तो उठाना भी मुश्किल है। मोटे लोगों की सेक्स में रुचि भी कम होती है व पति की भी मोटापे के कारण रुचि कम हो जाती है। सांस जल्दी फूलने लगती है। कई कैरियर में मोटापा बाधक होता है, जैसे–मॉडलिंग,रिसेशनिस्ट, टेलीफोन, ऑपरेटर, पीआरओ बिजनेस एक्सीक्यूटिव व इत्यादि।

आज की नारी हर हालत में चुस्त–दुरुस्त और छरहरी रहना चाहती है। फिटनेस से उसका व्यक्तित्व निखरता है। जिन्हें कुदरत ने स्लिम शरीर नहीं दिया और जो मोटी और बेडौल है, वे कुछ आसान तरीकों को आजमाकर स्लिम यानी छरहरी और आकर्षक बन सकती है।

कहावत भी है कि मोटापा और सुंदरता एक साथ नहीं रह सकते। मोटापा शरीर की बनावट ही नहीं बिगाड़ता, बल्कि चेहरे की सुंदरता को भी कम कर देता है। जब चेहरा ही आकर्षक नहीं रहेगा तो आत्मविश्वास अपने आप ही गायब हो जाएगा। यही नहीं, मोटापा, सुडौलता को नष्ट करने के साथ–साथ कई गंभीर बीमारियों–मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हार्ट अटैक, गठिया, लीवर की कई बीमारियों की वजह भी बनता है। अतः मोटापे पर काबू पाना निहायत ही जरूरी है क्योंकि मोटापा सुन्दरता का दुश्मन है।

वैसे तो मोटापे का मुख्य कारण अधिक खाना–पीना ही है। ज्यादा कैलोरी और वसायुक्त खाना खाने से मोटापा तीव्रता से बढ़ता है। इसके अलावा दुःख, अकेलापन, कमजोरी, प्यार की कमी और नफरत भी ज्यादा खान–पान की ओर मोड़ते हैं, जिससे वजन बढ़ने लगता है। कभी–कभी थायराइड और पिट्यूटरी ग्रंथियों के बिगड़ जाने के कारण भी अचानक मोटापा बढ़ जाता है।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

आर्य ब्राह्मणों के विदेशी होने संबंधी भारतीय विद्वानों का मत

'आर्य ब्राह्मण विदेशी हैं' इस तथ्य को न केवल विदेशी विद्वान मानते हैं बल्कि इतिहास, वेद और संस्कृत के कई हिन्दूनिष्ठ भारतीय पंडित भी इसे डंके की चोट पर स्वीकारते हैं तथा अपने कथन के पक्ष में अलग–अलग प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं, भले ही उनके दावे में आर्यों के मूलवास स्थान संबंधी मतैक्यता न हो। कुछ उदाहरणस्वरूप यहाँ दिये जा रहा है –

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का मत– तिलक भारत के सुविख्यात राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी, इतिहास तथा वैदिक शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने अपनी पुस्तक 'आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन' में लिखा है कि आर्य लोग सबसे पहले उत्तरीय ध्रुव के निवासी थे। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि देवताओं के दिन–रात छः–छः महीने के होते हैं। यह बात उत्तरी ध्रुव के विषय में आज भी घटित है। आइसलैंड नामक टापू में भी यही दशा है। जब तक सूर्य उत्तरायण रहते हैं, तब तक वहाँ बराबर दिन रहता है। इसी प्रकार दक्षिणायण सूर्य में छः मास (आश्विन से फाल्गुन) रात बनी रहती है। इस प्रकार ध्रुव प्रदेशों में वर्ष में एक ही दिन–रात होती है। हिन्दू शास्त्र में देवताओं का यही दिन मानते हैं। उनके अग्नि–होत्री और हवन–प्रिये (यज्ञ) होने का यही कारण है कि वे छः माह अनवरत रात्रि का सामना करते थे। रात्रि के अँधेरे को वे आग जलाकर दूर करते थे। इसकी निरंतर आवश्यकता को देखते हुए आग जलाने की परम्परा को वे धर्म और पवित्रता से जोड़ दिये जो बाद में अग्नि–होत्र और यज्ञ–हवन के रूप में विकसित हुआ। इससे यही सिद्ध होता है कि आदिम आर्य लोग उत्तरी ध्रुव में रहते थे। इसके लिए तिलक ने ऋग्वेद के प्रथम मंडल के उस मंत्र का सहारा लिया है जिसमें लिखा है कि– ''हमारे वैदिक रात्रि और उपस–काल मीठे हैं। भारत, जहाँ हम जाते हैं, हमारे लिए योग्य हो, जो स्वर्ग हम छोड़ रहे हैं वह भी हमारे योग्य है।'' भविष्य पुराण बतलाता है कि आर्य उत्तर कुरु (तिब्बत) में रहते थे और वहाँ से मध्य भूमि (मध्य एशिया) में आये।

स्वामी दयानंद सरस्वती का मत – इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में इस मत की स्थापना की है कि आर्यों का मूलनिवास तिब्बत में था और वहीं से ये भारत आकर बस गये। परन्तु इस पर विद्वान सहमत नहीं है।

लाला लाजपत राय का मत – इन्होंने अपनी पुस्तक 'भारत वर्ष का इतिहास–प्रथम भाग' में लिखा है कि 'मेरी सम्मति ने इस बात को ऐतिहासिक रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए कि हिन्दू–आर्य भारत के मूलनिवासी नहीं हैं। आर्य जाति एक बहुत बड़ी जाति थी। यूरोप की प्रायः सभी जातियाँ और एशिया में भारतीय तथा ईरानी ये सब इस वंश से बतलाई जाती है।'' हिन्दू आर्य भारत वर्ष में उत्तर पश्चिमी दर्रों से ऐतिहासिक काल के बहुत पहले प्रविष्ट हुए। कहा जाता है कि उस समय भारत में द्रविड़ जाति अपनी सभ्यता के उच्चतम शिखर पर थी और आर्य लोगों ने उनको दक्षिण की ओर ढकेल दिया।

सर रमेशचंद्र दत्त – विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार तथा वेदों के मर्मज्ञ दत्त के अनुसार आर्यों ने पंजाब देश में आकर निवास किया था, इस काल के इतिहास का पता ऋग्वेद के सूक्तों से पता चलता है। आर्यों ने अपने बाहुबल से इस देश को यहाँ के आदिवासियों से छीन लिया। इस प्रकार यह युग आदिवासियों और आर्यों के बीच युद्ध और विजय करने का था। आर्य–योद्धा अपनी जय का अभिमान हर्ष के साथ भजनों में करते थे और देवताओं से प्रार्थना करते थे कि उन्हें धन और नये अधिकार दें, और अनार्यों का नाश करें।

पंडित जवाहर लाल नेहरू – आर्य उत्तर–पश्चिम के क्रमवार भारत में आये थे। उनका भारत प्रवसन (migration) सिंधु–सभ्यता के एक हजार वर्ष के बाद हुआ था। वे भारत आकर यहाँ के मूलनिवासी द्रविड़ों को पराजित कर उन्हें गुलाम बनाया। द्रविड़ सिंधुघाटी सभ्यता के प्रतिनिधि थे। चातुर्वर्णीय व्यवस्था और जातिप्रथा आर्यों की देन हैं। बाद में जाति को और कठोर बनाया गया। जाति का निर्माण मूलतः आर्यों को अनार्यों से अलग रखने की नीयत से की गई थी। आर्यों ने न केवल समाज को चार वर्णों में बाँटा, बल्कि मानवीय जीवन को भी चार भागों में बाँट लिया।

राजाराम मोहन राय – इन्होंने 1884 में, लंदन की अपनी यात्रा के दौरान कहा था– ''मैं पूर्व में पश्चिम की ओर आया हूँ... और मुझे महसूस हो रहा है कि एक बार फिर हम अपने पुराने आर्य–भाई एक हो जायें....'' विभाजन से पहले के इतिहास में हमारी विजय प्रदान करने वाली शक्ति और श्रेष्ठता का प्रेरणादायी प्रसंग है।

मोहनदास करमचन्द गाँधी – अंग्रेज और आर्य भारतीय, एक ही डाली के दो फूल हैं। भारतीय आर्य ब्राह्मण लोग अपने आर्य–वंशी होने की बात से अत्यंत गौरवान्वित होते थे, उसकी खूब बखान करते थे, एवं अपने संस्कृति एवं धर्म को अन्य मूल भारतीय संस्कृतियों से श्रेष्ठ मानते थे, ताकि अंग्रेजों का विश्वास उन पर बढ़े और भारत उनके प्रशासन के लिए उपनिवेश बना रहे।'' (सन् 1894 में गाँधी जी द्वारा मेम्बरर्स ऑफ लेजिस्ले ऑफ नेटल, साउथ अफ्रिका को लिखे एक खुला पत्र का उद्धरण)

स्वामी विवेकानंद – इन्होंने कई स्थानों पर उल्लेख किया है कि आर्य यूरोपीय क्षेत्र से आये थे।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी – एक आर्य प्रतिनिधि के रूप में उजागर किया था कि भारत में उनकी जड़े नहीं हैं।

साभार :
आनुवांशिक शोध (D.N.A.)
एवं विदेशी आर्य–ब्राह्मण
पेज संख्या 39 से 41 तक
डॉ. विजय कुमार त्रिशरण

ल्यूकीमिया जीवन के लिए घातक

सामान्य जनसमुदाय में ल्यूकीमिया को ब्लड कैंसर कहते हैं। यह रक्तजन्य व्याधि है। तथा प्रायः इस रोग से ग्रस्त रोगी पांडुरोगी के सदृश्य दीखता है। कई चिकित्सक दुष्टपांडु को ल्यूकीमिया कहते हैं। आजकल ल्यूकीमिया अधिक संख्या में व्याप्त हो गया है। विश्व के चिकित्सकों तथा वैज्ञानिकों के लिए यह रोग समस्या है। इस रोग में चिकित्सापूर्ण लाभकारी नहीं होती है। रक्त कैंसर अस्थि मज्जा (बोन–मैरो) का रोग है जो शरीर के रक्तकणों का निर्माण करती है। हर तरह से रक्तकणों के कार्य अलग, अलग होते हैं। लाल रक्तकणिकाएँ विभिन्न अवयवों को शरीर के भिन्न–भिन्न भागों में पहुँचाने का कार्य करती है, जबकि श्वेत कणिकाओं का कार्य किसी भी तरह से शरीर में घुस आए जीवाणुओं आदि को नष्ट करना होता है। लाल रूधिर कणिकाओं की भाँति श्वेत कणिकाएँ भी अपने सामान्य रूप में आने से पहले विभिन्न रूपों तथा स्थितियों से गुजरती है। जैसा कि हम जानते हैं कि श्वेत रक्त कणिकाओं का निर्माण अस्थिमज्जा करती है जब मज्जा के कार्य की सक्रियता बढ़ जाती है और जल्दी–जल्दी बहुत अधिक संख्या में अपरिपक्व अथवा दुर्बल श्वेव रक्त कणिकाओं का निर्माण करने लगती है, तो इस स्थिति को रक्त कैंसर कहते हैं। रक्त कैंसर वस्तुतः रूधिरकोषों को उत्पन्न करने वाली पेशी (ऊतक) का कैंसर कहते हैं। रक्त कैंसर वस्तुतः रुधिरकोषों में कैंसर का उद्भव नहीं हो सकता, क्योंकि उनकी संख्या वृद्धि नहीं होती है। सही रूप से रक्त कैंसर अस्थिमज्जा का कैंसर ही है। यह एक ऐसा रोग है जो अस्थिमज्जा की लसिका वाहिनी तथा जालीय अंतर्कला तंत्र को आकांत करके श्वेत रक्तकणों के उत्पादन में अधिक सहायक होते हैं। इसमें अपरिपक्व श्वेत रक्तकण परिक्कावस्था को प्राप्त नहीं हो पाते हैं। इसीलिए श्वेतरक्ता (ल्यूकीमिया) को नवार्बुद रोगों अंगों का कैंसर मानते हैं।

सामान्यतःश्वेत रक्तकणों (डब्ल्यू.बी.सी.) की संख्या 6000 से 8000 प्रति क्यूबिक मिली, पर श्वेत रक्ता (ल्यूकीमिया) में यह संख्या बढ़कर 1 से 4 लाख तक हो जाती है। इस रोग की अवधि कुछ सप्ताह से लेकर कुछ वर्षों तक रहती है, पर प्रत्येक अवस्था में यहां तक ही होता है। सन् 1930 के बाद में श्वेत रक्त से मरने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। जीर्ण प्राक्कणिकाब स्वेत कोशिकामय श्वेत रक्तता कानिक माइलॉइड ल्यूकीमिया 20 से 60 वर्ष के बीच की अवस्था में सर्वाधिक रूप से मिलती है। ल्यूकीनिया स्त्रियों की उपेक्षा पुरुषों में अधिक होती है। इसी प्रकार से प्रतिकलिफ साइटिक ल्यूकीमिया प्रायः 45 से 60 वर्ष के बीच की अवस्था में होती है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....
सुषमा हॉस्पिटल एण्ड नर्सिंगहोम
डॉ0 सुषमा आर्या
(एम.बी.बी.एस., डी.जी.एफ.आई.सी.ओ.जी.)
मो.: 7897992906
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जितेन्द्र निषाद
पूर्व पिछड़ा वर्ग नगर अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी
मो.: 9936260799
चम्पापुरवा, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....
प्रो. (डा.) राम प्यारे
सदस्य उ. प्र. लोक सेवा आयोग, प्रयागराज, उ. प्र.
मो.: 9140967616

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरजीत सिंह
जूनियर इंजीनियर
निर्माण खण्ड भवन लोक निमार्ण विभाग, कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....
सहाराम
प्रधान सहायक
कार्यालय अपर श्रमायुक्त उ0प्र0
कानपुर क्षेत्र, सर्वोदय नगर, कानपुर
मो.: 9415893153

प0स0 NCSC-K/Accounts-S/Office Order/2024-25/
Government of India/भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment/श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,
Directorate General of Employment/रोजगार महानिदेशालय
National Career Service Centre for SC/STs/नेशनल केरियर सर्विस सेन्टर फॉर एस0सी0/एस0टी0
NCSC for DA Building, B-Wing, 1st Floor/एन0सी0एस0सी0 फॉर डी0ए0 बिल्डिंग, बी–विंग, प्रथम तल
NSTI Campus, Udyog Nagar, Kanpur, UP-208022/एन0एस0टी0आई0 परिसर, उद्योग नगर, कानपुर, उ0प्र0–208002
E-mail : ncscscstknp@gmail.com • Mob. No.: 7988193472

निःशुल्क कोर्स अनुसुचित जाति/जन जाति हेतु

The detail of Courses/Training Programmes with eligibilty criteria is as under :-

S. No.	Name of the courses	Duration of the courses	Age Limit	Minimum Qualification	Maximum Family Income	Books & Stationery & Stipend Rs. 1000/- Per month	Likely to be Commenced
1	Special Coaching Scheme (Slenography)	01 Year	18-27 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July
2	'O' Level Computer Software training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July
3	'O' Level Computer hardware training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July
4	Office Automation Accounting and Publishing Assistant through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July
5	Computer Application and Business Accounting Asscoiate through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July
6	Cyber Secured web Development Associated through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July

Desirous SC/STs jobseekers may visit www.ncs gov.in or www doe gov.in and submit their application to the National Career Service for SC/STs where the candidate is interested for participating in the above said program. Candidates would be considered for only one course. The candidates may indicate their choice of courses in order of their preferences

(राज कुमार)
उप–क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी
राष्ट्रीय आजीविका सेवा केन्द्र, कानपुर
Mob. No. 7988193472

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आनन्द मोहन

सेवानिवृत्त संयुक्त आयुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाए ....

के. पी. वर्मा

उपायुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निर्देशालय, कानपुर
मो0 : 9415268129

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाए ....

दिनेश कुमार

उच्चश्रेणी सहायक
CAB-2 रतनलाल नगर, कानपुर
मो0 : 8787009303

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोहित

अधिशासी अभियन्ता
मध्य गंगा नहर निर्माण खंड 10
सिचाई एवं जल संसाधन विभाग, बुलन्दशहर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रताप सिंह

प्रशासनिक अधिकारी
मुख्य अभियंता कार्यालय, लोक निर्माण विभाग, कानपुर
मो.: 9415430469

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय बौद्ध

सुपरिंटेंडेंट सी.जी.एस.टी.
सर्वोदय नगर, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश कुमार

सेवानिवृत्त प्रधान सहायक
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो0 : 9005201853, 7007615951

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भूप सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो0 : 9455646040

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो0 : 9839791024

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर, उ0प्र0
मो0 : 7905305856

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अर्चना कैथवार

प्रशासनिक अधिकारी (उपाध्यक्ष)
लेबर डिपार्टमेन्ट मिनिस्टीरियल एम्प्लाइज एसोसिएशन उ0प्र0
कल्चर मिनिस्टर उ.प्र. राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाए ....

सुन्दरलाल

उच्चश्रेणी सहायक
CBO-4 रतनलाल नगर, कानपुर
मो0 : 9450567807

समस्त सम्मानित क्रमिको एवं नगरवासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मेवालाल

प्रधान सहायक
अध्यक्ष मिनिस्ट्रयल एसो. लोक निर्माण विभाग, कानपुर क्षेत्र
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी
उपाध्यक्ष रा0क0स0 परिषद, कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राज नारायण

प्रधान सहायक
कानपुर वृत्त लो0 नि0 वि0, कानपुर
मो0 : 9455513212

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

प्रशासनिक अधिकारी
मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953
अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामचरन

पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो0 : 9984251800

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो0 : 9696222033

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

डिपो मनैजर/नाजीर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रतिमा रानी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो0 : 9305218844

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामकिशोर

मो0: 7080249402
प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी.रोड, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द कुमार

कनिष्ठ लिपिक
मो.: 9621999187
जोन–1 नगर निगम कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गुलाब चन्द्र

ज्वाइंट कमिश्नर, राज्यकर विभाग, अलीगढ़

मो० : 8052326421

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गीता कुमारी

प्रशासनिक अधिकारी

कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी. रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बी. के. दीपंकर

डिप्टी कमिश्नर

राज्य कर विभाग, गाजियाबाद

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरविन्द कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.

शाखा गोविन्द नगर कानपुर

मो.: 9956976995

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सी. के. गौतम

डिप्टी कमिश्नर राज्यकर विभाग

बहराइच

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मनोज कुमार

अनुदेशक, एच.बी.टी.यू., कानपुर

मो० : 9415727195

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर के आजाद

सेवानिवृत्त सहायक मण्डल प्रबन्धक

भारतीय जीवन बीमा निगम

मण्डल कार्यालय बीमा सेवा विभाग, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राजेन्द्र कुरील

लेखाकार

पी.पी.एन. डिग्री कालेज, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ ....

रामनरेश | धर्मेन्द्र सोनकर

महासचिव (आई.टी. सेवा) अध्यक्ष

इनकम टैक्स एस.सी./एस.टी. एम्प्लाइस वेलफेयर एसोसिएशन, कानपुर

मो. 7599101755

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

इं. कोमल सिंह दोहरे

बामसेफ प्रदेश अध्यक्ष

मो० : 8400216741

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुहैब अनवर अन्सारी

प्रबन्धक उत्पादन

उ. प्र. राज्य हथकरघा निगम लि.

जी.टी. रोड, कानपुर उ.प्र.

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राम अवतार चौधरी

अधिशाषी अभियंता

जलकल विभाग, वाराणसी, उ. प्र.

मो.: 9450272500

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

लक्ष्मी नारायण

प्रशासनिक अधिकारी

प्राविधिक शिक्षा निदेशालय कानपुर

मो० : 9450152297

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बबली गौतम

आजाद समाजपार्टी, कानपुर

मो० : 9793739431

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुधीर कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.

शाखा सर्वोदय नगर, जी. टी. रोड, कानपुर

मो.: 9411663069

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

छविलाल वर्मा

प्रधानाचार्य

श्रीविद्यानन्द जूनियर हाईस्कूल

जरौली, चरखारी, महोबा, उ.प्र.

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अखिल भारतीय एल.आई.सी. बहुजन कर्मचारी एवं अधिकारी अर्गनाइजेशन

जोनल कमेटी उ0प्र0 उत्तराखण्ड
आर. के. गौतम (अध्यक्ष)
मो0: 9532612084
राधेश्याम वर्मा, महासचिव (उ0प्र0 उत्तराखण्ड)
मो0: 7007038182

डिवीजनल कमेटी कानपुर
एच. एल. गौतम (अध्यक्ष)
मो0: 9415536159
एस. के. गौतम (मण्डल सचिव)
मो0: 9415077826

सेवा में,

नाम ....

पता ....

....

....

जल अमूल्य निधि है

जल ही जीवन है

शन्नो वरुण:
जल कल विभाग, नगर निगम कानपुर

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1–	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1–	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2–	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2–	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3–	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3–	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4–	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर फोन कर अवगत करायें।	4–	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5–	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827/26 पर इसकी जानकारी दें।	5–	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6–	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6–	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल–संरक्षण

1– बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250–300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।

2– जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।

3– प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगातें हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।

4– ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके/बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।

5– सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

सचिव
प्रमोद कुमार सिंह

महाप्रबन्धक
आनन्द कुमार त्रिपाठी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रखर टेन्ट हाउस

प्रो0 अनूप साहू, मो.: 9919275582

स्टेज, जयमाला, मण्डप एवं बिजली का सामान किराये पर मिलता है।

पशु चिकित्सालय वाली गली, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय कुमार रावत

कोटेदार

कटहा दलनरायनपुर आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

न्यू आनंदपुरम

प्रो0 कुलदीप यादव

मो.: 9838111152

राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राज कुमार भारतीय

समाजसेवी

मो.: 8840358216

देवारा, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मंगल सिंह (बृजेश सिंह)

एडवोकेट (पूर्व महामंत्री बार एसोसिएशन, उन्नाव)

मो.: 9838167380

राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राहुल कुमार

एडवोकेट

मो.: 9415782874

रश्मि लोक आजाद नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

शहनाई गेस्ट हाउस

प्रो0 मनोज रावत

मो.: 9839166551

धोबी पुलिया के पास, राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विश्वनाथ वर्मा

प्रधान

मो.: 8299851769

घोघी, रौतपुर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्याम बहादुर यादव

प्रापर्टी डीलर

मो.: 6394267196

आजाद नगर बाजार, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अमित कुमार

समाजसेवी

मो.: 9935626408

आर्दश नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

देशराज

कोटेदार

मो.: 9838967018

देवारा, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रकाश ट्रे र्स ब्रएंड डेवलपर्स

प्रो0 जीतू साहू

मो.: 9889883718

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बीरबल गुजराती

समाजसेवी

मो.: 8795677777

चन्द्रशेखर आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अखिलेश निषाद

प्रधान

मो.: 8931007224

मिर्जापुर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रिंकू सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल

रिंकू

मो.: 9453324289

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मोहित टंडन

समाजसेवी

मो.: 8318811286

मरहाला चौराह, आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जनता प्रापर्टी

प्रो0 पूरन भाटिया

मो.: 9044420848

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बाबा हॉस्पिटल

राहुल सिंह

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विकास मिश्रा

पूर्व जिला पंचायत सदस्य

मो.: 9935293169

झंडा चौराहा, पोनी रोड, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रंजीतपाल

प्रापर्टी डीलर

मो.: 6394748458

आजाद नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

DSN Coyote Land Developers Pvt. Ltd.

प्रो0 दीपेन्द्र शुक्ला (दीपू)

मो.: 9838532767

18/85, गांधी नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

इण्डेन गैस एजेन्सी

प्रो. मिन्टू गुप्ता

मो.: 9839116055

राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

तिवारी ट्रेडर्स

प्रो0 मनोज तिवारी

मो.: 9935562885

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कौशल्या ज्वैलर्स

प्रो0 निलेश सिंह

मो.: 9125321762

आजाद नगर बाजार, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

दिव्या बालाजी फर्नीचर

प्रो. आकाश त्रिवेदी

राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अमित मिश्रा

उर्फ मोना पंडित

मो.: 8934979100

आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

शान्ति मेडिकल सेंटर

डा0 आकाश गुप्ता, डा0 अनीता गुप्ता

मो.: 7651846471

राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नैन्सी ज्वैलर्स

प्रो. मुकेश सिंह

मो.: 8175007779

आजाद नगर बाजार, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बृजबाला टेड्र ʻ

प्रो0 देवेन्द्र आवस्थी

मो.: 9935664484

शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सए. के. लेदर

प्रो0 अतीक जामल

मो.: 9839611007

अली नगर, आजाद नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कृष्ण स्वीट हाउस

प्रो. लव सिंह राजपूत
मो.: 9838497777
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बबलू साहू

(सामजसेवी) प्रापर्टी डीलर
मो.: 7007310066
आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश निषाद

पूर्व प्रधान
मो.: 9838089231
लख्मीखेड़ा, खैरहा एहतमाली, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भारत गैस एजेन्सी

प्रो. प्रमोद त्रिवेदी
मो.: 9532092505
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रतिभान

(शिवराज)
मो.: 7651902872
बनी पोस्ट कन्जौर, सिकंदरपुर, सरोसी, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विशाल त्रिपाठी

(बिल्लू पांडा)
मो.: 8009791441
मिश्रा कालोनी, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

महादेवा

प्लाई बोर्ड हार्डवेयर तथा प्लास्टिक दरवाजा के विक्रेता
प्रो. गुड्डन गुप्ता
मो.: 9369120855
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरुण रावत

प्रधान
मो.: 9305777097
नेतुवा, आजाद नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

के. जी. पैलेस एवं मैरिज हॉल

प्रो0 शकील अहमद, इमरान अहमद
मो.: 9554195327
गाजियाखेड़ा, आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

दीपचन्द्र निषाद

प्रधान
मो.: 8423132673
कटहा दलनारायनपुर, आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नन्हे लाल राजपूत

प्रो0 पूरन भाटिया (बाबा)
मो.: 9935899471
मुस्कापुर बनी पो. कन्जौर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जी एण्ड आर फार्माक्यूटिकल

प्रो0 विजय राठौर
मो.: 9045224338
झकरकटी, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बादनाम लड्डू व कुल्फी भंडार

प्रो0 अखिलेश पाण्डे
मो.: 6394764408
अम्बिकापुरम, राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

वेद प्रापर्टी

प्रो0 शशिकांत
मो.: 9696754141
शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सौरभ कार बाजार

संजय वर्मा, मो.: 8840664631
सौरभ वर्मा, मो.: 9305712065
पॉवर हाउस के सामने, राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

चाय साय रेस्टोरेंट

प्रो0 छोटू शुक्ला
मो.: 9889008949
अम्बिकापुरम, राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

किरन ज्वैलर्स वर्क्स

प्रो0 अनिल साहू
गीता लॉन सर्राफा बाजार, पोनी रोड, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मिश्रा खोया भंडार

(गोपाल डेयरी एण्ड मिल्क प्रोडक्ट)
अमित राजू आदित्य
मो.: 8787252510
शॉप नं. 202, एक्सप्रेस रोड, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विट्टन देवी

प्रधान, मो.: 9151663531
रमेश (आगेहार प्राधन प्रतिनिधि)
शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द्र (पप्पू)

सभासद
मो.: 9984857888
वार्ड (17), शक्ति नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

माँ शीतला गेस्ट हाउस एवं लॉन

प्रो0 रामबाबू निषाद
मो.: 9598525319
गाजियाखेड़ा, आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राजनीश विमल

प्रधान
मो.: 9792422146
बसाधाना, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

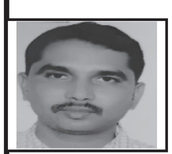

शान्ती पैलेस एवं मशीनरी स्टोर

प्रो0 एकलव्य कुमार
मो.: 7607111112, 7376759591
निहान खेड़ा, पोनी रोड, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

उदायराज पासी

प्रधान
मो.: 6388481721
पीपर खेड़ा, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नीलम ज्वैलर्स

प्रो0 मुन्ना सोनी, मो.: 9838584076
सोनू सोनी, मो.: 9839780966
पोनी रोड, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गुड्डी (प्रधान)

शिव कुमार (प्रधान प्रतिनिधि)

लख्मीखेड़ा, एहतमाली, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विमलेश चौहान

समाजसेवी
मो.: 7785976167
ग्राम सम्भर खेड़ा, पोस्ट देवारा कला, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सर्वेश निषाद

प्रधान
मो.: 8528707599
फतेहपुर, रौतपुर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

योगेश कुमार अवस्थी

नमस्ते इंडिया दूध के थोक विक्रेता
मो.: 7985257461
मिश्रा कॉलोनी, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कीर्ति ज्वैलर्स एण्ड कुबेर रत्न केंद्र

प्रो0 सोमेश साहू
मो.: 9873092768
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव